डॉ० संगीता राय
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

वर्नर नियम (Verner's law) :→

कार्ल वर्नर (Karl Verner 1846-1896) जर्मन भाषाशास्त्री थे। इन्होंने ग्रिम-नियम का संशोधन किया। ग्रिम-नियम के जो अपवाद रह-गए थे, उनके विषय में वर्नर ने ज्ञात किया कि ग्रिम-नियम का आधार (Accent) उदात्त स्वर था।

वर्नर नियम का स्वरूप :→

मूल भारोपीय भाषा के शब्दों के क्, त्, प् (K, t, P) को जर्मानिक भाषाओं में ह, थ्, फ् (h, th, F) तभी होता है, जब मूल भाषा में अव्यवहित पूर्व कोई उदात्त स्वर होता है, यदि उदात्त स्वर क्, त्, प् के बाद होगा तो इनके स्थान पर क्रमशः ग्, द्, ब् होते हैं।

उदात्त का चिह्न तिरछी सकीर (') द्वारा दिया गया है।

	संस्कृत	लैटिन	गाथिक	अंग्रेजी	ध्वनि परिवर्तन
1)	युवक'स्	Juvencus	Juggs	Young	क् > ग्
2)	शत'म्	Centum	Hund	Hundred	त् > द्
3)	सप्त'न्	Septem	Sibun	Seven	प् > ब्

इनमें क्, त्, प् के बाद उदात्त स्वर है, अतः इन्हें ह, थ्, फ्, न होकर ग्, द्, ब् हुए हैं

भ्रातर् में त् से पहले उदात्त है, अतः गाथिक और अंग्रेजी में Brother में (t > th) त् को थ् मिलता है। ब्रॉथर को ही ब्रदर बोला जाता है।

मिथ्या-सादृश्य :- वर्नर नियम के भी कुछ अपवाद मिलते हैं। इनका समाधान मिथ्या-सादृश्य (Analogy) के द्वारा किया जाता है। भ्रातर > Brother होता है। इसके सादृश्य पर ही अंग्रेजी में पित'र > Father और मात'र > Mother बनते हैं। इनमें वर्नर के नियमानुस त > द् (t > d) होना चाहिए था, पर हुआ है त > थ् (t > th)। इसका कारण मिथ्या सादृश्य ही समझना चाहिए।

—x—